International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-11-2020; Accepted: 19-11-2020; Published: 04-12-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 6; 2020; Page No. 123-125

भारतीय उच्च शिक्षा के विकास मे एन.ए.ए.क की भूमिका व चुनौतियो

हर्ष कुमार
असिस्टैन्ट प्रोफैसर, डिपार्टमैंट ऑफ हयुमैण्टिस, भोपाल स्कुल ऑफ सौशल साईंस, भोपाल, मध्यप्रदेश, भारत

सारांशः वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा के विकास के अनेक संस्थाओ का योगदान है। इन्हीं सस्थाओं की उच्च नीतियो और कार्यवाहियो के सहारे भारतीय उच्च शिक्षा ने इतना विकास किया है। इन संस्थानो मे से एक है। एन.ए.ए.क यानी की राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यापन परिषद इस संस्था ने भारतीय उच्च शिक्षा के सस्थानो मे शिक्षा की गुणवत्ता को बढाने के लिए अनेक प्रयास किए नैक एक स्तापत संस्था है। जिसे यूजीसी द्वारा संस्थानो के आंकलन और मान्यता देने के प्रमुख एजेंडे के साथ स्थापित किया गया है। ताकि वह उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को बनाए रखे। मुल्यांकन और प्रत्यापन का उपयोग मोटे तौर पर किसी संस्थान की गुणवत्ता पूर्ण स्थिती को समझने के लिए किया जाता है। साधारण शब्दो मे कहे तो उच्च शिक्षा के संदर्भ मे मान्यता की स्थिति इंगित करती है। जैसे कि विशेष रूप से उच्च शैक्षणिक संस्थान कॉलेज, विश्वविद्यालय या अन्य कोई मान्यता प्राप्त संस्थान, अपने प्रदर्शन के आधार पर प्रत्यापन एजेंसी द्वारा निर्धारित शैक्षिण प्रक्रिया, परिणाम, पाठक्रम को कवर करना, निरक्षण, शिक्षण मुल्यांकन, संकाय, सगठन, शासन, वित्तिय कल्याण और छात्र सेवाए शामिल है। वर्तमान भारतीय उच्च शिक्षा आज जिस स्तर पर है। कही न कहीं उनमें नैक की भी भूमिका है। और यह पत्र नैक की भूमिका व चुनौतियों का एक विशलेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। यहीं इस पत्र का मुख्य उद्देश्य है। उच्च शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार के लिए आवश्यक है। की वह संस्थाए नैक द्वारा मान्यता प्राप्त हो क्योकी इस से उच्च शिक्षा मे आत्म मुल्यांकन, जवाबदेही, स्वायत्ता और नवाचारी को प्रोत्साहन मिलता है। जिससे उच्च शिक्षा की गुणवत्ता मे सुधार होता है। वर्तमान संदर्भ मे अगर उच्च शिक्षा व शिक्षण संस्थानो मे गुणवत्ता लानी है। तो इन के बुनियादी ढाँचे मे बदलाव की आवश्यकता है। और वहीं नैक कर रहा है। शिक्षा संस्थान और उच्च शिक्षा मे गुणवत्ता बढाने के लिए सर्वोत्तम तरीका, बेचमार्किंग दुष्टिकोण की वकालत करता है। यह पत्र उच्च शिक्षा में नैक की भूमिका का वर्णन हमारे सामने प्रस्तुत करता है।

मूलशब्दः उच्च शिक्षा, चुनौती, नैक सत्यापन

प्रस्तावना

भारत एक विकासशील देश है। और विश्व की अर्थव्यवस्था मे अपनी जगह मजबुत बनाने मे वह सदैव प्रत्यन्न करता रहता है। जिस के लिए आवश्यक है। योग्य व कुशल, प्रशिक्षित पेशेवरो की। वर्तमान समय उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा की माँग करता है। इसलिए हर राष्ट्र वर्तमान समय मे अपनी शिक्षा प्रणाली को विश्व स्तर की बनाने के लिए तेजी से कार्य कर रहे है। शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति को शिक्षित करना, प्रशिक्षित करना है। ताकि शिक्षा प्राप्त करने के बाद वह समुदाय के लिए कार्य करे। देश के अनुसधांन को आगे बढाए, देश की सेवा करें। भारतीय उच्च शिक्षा विश्व की दुसरी सबसे बडी शिक्षा प्रणाली है। जिसने स्वतत्रंता के बाद लगातार वृद्धि की है। जिसका परिणाम यह है। की 1950 मे भारत के पास 20 विश्व विद्यालय थे 2012 मे जिनकी सख्या बढकर 560 हो गई है। 500 से 20,677 कॉलेज हो गए है। 16,000 से अधिक शिक्षक व 6.05 लाख छात्रो के साथ भारत एक उभरती हुई शिक्षा प्रणाली है। इस उच्च गुणवत्ता को बढाने व बनाए रखने के लिए प्रत्यापन (नैक) होना जरूरी है। इसके आधार पर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) अधिनियम की धारा 12 के तहत (1956 का अधिनियम 3) मे संशोधन कर नैक की सथापना की गई। जिसका दायित्व उच्च शिक्षा की गुणवत्ता को लगातार बढाना शामिल है। नैक को प्राथमिक दायित्व उच्चतर गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रणाली को पैदा करता है तथा बनाए रखना शामिल है। ताकि मौजुदा शिक्षण संस्थानो के बुनियादी ढाँचे मे मजबुती लाकर उन को विश्व स्तर के शिक्षण सस्थान बनाया जा सके।

नैक का इतिहासः उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे नैक एक सर्वोच्च संस्था है। इस की स्थापना से भारतीय उच्च शिक्षा के क्षेत्र मे नए बदलाव देखने को मिले है। नैक का इतिहास ज्यादा पुराना नही है। देश की उच्च शिक्षा मे गुणवत्ता के लिए 1986 मे यूजीसी ने 15 सदस्यीय समिति का गठन किया था ताकि प्रत्यापन और मूल्यांकन परिषद का खाका तैयार किया जा सके। इसकी अध्ययक्षता डॉ वंसत गोवारीकर जी ने की थी। देश की शिक्षा प्रणाली पर बनी समिति गोवारीकर समिति की रिपोर्ट पर अध्ययन करने के लिए भारत सरकार ने 1987–1990 मे नौ क्षेत्रीय सेमिनारो का आयोजन किया। ताकि रिपोर्ट का नही मुल्यांकन किया जा सके। 1990 मे डॉ सुकुमारन ने यूजीसी को एक आंकलन रिपोर्ट जमा की जिसमे एक प्रत्यापन संस्था की स्थापना व इसकी यूजीसी के प्रति जवाब दे ही की बात कही गई थी। यह एक नया बदलाव 1992 मे आया जब नई शिक्षा नीति को संशोधित और शिक्षण संस्थानो के सम्पूर्ण विकास पर बल की बात कही गई। 1994 मे प्रो जी राम रेडी कमेटी के द्वारा प्रत्यापन संस्था के नियमो और विनियमन के ज्ञापन को मान्यता प्रदान की और अन्तिम रूप से 1994 मे (नैक) राष्ट्रीय मुल्यांकन और प्रत्यापन परिषद बैंगलोर मे इसकी स्थापना हुई (सितंबर 1994)

शासन संरचनाः देश की शिक्षा मे गुणवत्ता को सत्यापित करने वाली संस्था नैक का कार्य सामान्य परिषद द्वारा शासित किया जाता है। तथा इस की कार्यकारी निकाय मे विश्वविधालय अनुदान आयोग अखिल भारतीय तकनीकी परिषद, मानव ससांधन विकास मत्रालय भारतीय विश्वविद्यालय संध, विश्वविधालयो, कॉलेजो और अन्य पेशेवर सस्थानो के उच्च शिक्षा विद्धान इस निकायो मे नामित सदस्यो के रूप मे कार्य करते है। नैक के नियम कार्यकारी समिति नियम के 19(ख) के तहत बन्धे है। जिसका तात्पर्य यह है। की नैक के अध्यक्ष इसकी बैठको की अध्यक्षता करेगा, सभी कार्यकारी कार्य अध्यक्ष के उपस्थिती मे

कार्यवन्ति किए जाएगे तथा उस की गैर हाजरी मे उपाध्यक्ष यह कार्य वहन करेगा। और अगर उपाध्यक्ष भी अनुपस्थित रहेगे तो सबसे वरिष्ठ सदस्यो को यह जिम्मेदारी सौपी जाएगी। नैक अपने कार्यो को निर्वाहन अपनी जनरल कॉउसिल और कार्यकारी समिती और अन्य शैक्षणिक सलाहाकार और प्रशासनिक उप समितियो की सहायता से करती है। नैक अपनी गुणवत्ता और अपनी विशेषज्ञता बनाए रखने के लिए भारत से वरिष्ठ शिक्षाविदो की सहायता लेते है। नैक के कार्यो को सरल और सुगम कुछ महत्वपूर्ण समितिया बनाती है। जो कुछ इस प्रकार से है।

सामान्य परिषद
कार्यकारी समिति
वित्त समिति
भवन समिति
अपील समिति
क्रय समिति
CRIEQ। समिति

नैक अपने कार्यो मे गुणवत्ता व सुगमता प्रदान करने के लिए इन समितियो की सहायता लेता है। ताकि वह भारत की उच्च शिक्षा मे उचित गुणवत्ता व उस के बुनियादी ढाँचे मे मजबुती प्रदान कर सके। और इसे विश्व स्तर का बनाया जा सके।

गुणवत्ता सुधार मे नैक के प्रयासः शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए नैक ने राज्य सरकारो के लिए कुछ मार्गदर्शन जारी किए जिसके तहत राज्य सरकारो के सहयोग से राज्य स्तरीय गुणवत्ता व समन्वय संस्थान समिति की स्थापना की माँग की गई जिसकी सहायता से सहयोगात्मक कार्य नैक राज्यो से कर सकता है। जिन उच्च शिक्षण सस्थानो को नैक द्वारा मान्यता दे दी गई है। उन सस्थानो के बीच एक इनोवेटिव प्रैकिटस नेटवर्क की स्थापना की जाए ताकि सुचना का आदान प्रदान हो सके। उच्च शिक्षा मे अधिक गुणवत्ता लाने के लिए मान्यता प्राप्त संस्थानो को सेमिनार व कार्यशाला आयोजन करने के लिए वित्तिय सहायता प्रदान करना ताकि शिक्षा की गुणवत्ता बढाई जा सके। नैक के प्रयासो के तहत हर राज्य सरकारो के सहयोग से एक आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठो की स्थापना करना जिससे शिक्षा की गुणवत्ता बढाई जा सके। नीति निर्माण मे मान्यता प्राप्त व प्रत्यापन प्राप्त शिक्षण संस्थानो की रिपोर्टो की राज्य स्तर पर जाँच करना ताकि विकास एक समान हो। गुणवत्ता की पहल के लिए लीड कॉलेज ओर कलस्टर कॉलेज की अवधारणा को प्रोत्साहित करना। मान्यता प्राप्त उच्च शैक्षिण संस्थानो के संकाय के लिए अनुसंधान अनुदान परियोजना के लिए वित्तिय राशि उपलब्ध करवाना। और गुणवत्ता सुधार के लिए छात्रो की भागीदारिता को सुनिश्चित करना। यह प्रयास नैक द्वारा गुणवत्तापूर्ण सुधार के लिए किए है।

उच्च शिक्षा की चुनौतियाः वर्तमान उच्च शिक्षा का परिवेश गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की मांग करता है। शिक्षा शैक्षिण प्रौधोगिकी का व्यापक उपयोग हो। शिक्षा की गुणवत्ता का मापन वर्तमान मे क्षेत्रीय स्तर तक सीमित नही रह गया है। ब्लकि यह वैशितक स्तर की शिक्षा की मांग करता है। शिक्षा के स्तर को ऊपर उठाने के लिए हर किसी के पास शिक्षा की पहुँच को सुनिश्चत करना होगा। जिसके लिए वर्तमान शिक्षा प्रणाली को बदलना व कुछ सुधार करने की आवश्यकता है। इसके लिए दुरस्थ शिक्षा को और मजबुती प्रदान करनी होगी। सुचना प्रौगोद्यिकी का उपयोग अधिक करना होगा। शिक्षा जगत मे सुधार व शिक्षा मे गुणवत्ता के लिए कई संस्थान दुरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहित कर रहे है। ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगो तक शिक्षा पहुचाई जा सके। और शिक्षा मे उच्च गुणवत्ता लाने के लिए संस्थानो द्वारा मल्टीमिडिया तकनीकी संसाधनो का प्रयोग किया जा रहा है। इसी तरह की चिंता अन्तराष्ट्रीयता के सदर्भ मे भी है। बहुत सारे विद्यार्थी अच्छी और उच्च शिक्षा के लिए विदेशी विश्वविद्यालयो मे दाखिला लेते है। ताकि उनको उच्च व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त हो सके साथ ही बुनियादी समझ विकसीत हो सके। लेकिन सरकारो को चाहिए की वह विदेशी उच्च शिक्षा भारत मे ही प्रधान करे ताकि हर विद्यार्थी को घर बैठे ही अच्छी व गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा प्राप्त हो। वर्तमान समय निजी उच्च शिक्षा का दौर है। बहुत सारे निजी उच्च शिक्षण संस्थान स्थापित हो रहे है। और चुनौती यह आ रही है। की इन निजी संस्थानों मे गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा के मानको को कैसे बनाए रखे। निजीकरण छोटी–2 चुनौतियो को पैदा करता है। परन्तु व्यवहारिक तौर पर बहुत बडी मुश्किले पैदा करता है। उच्च शिक्षा मे गुणवन्ता बनाए रखने के लिए। क्योकि यह गुणवत्ता की नही ब्लकि लाभ के लिए कार्य करता है। ये संस्थान योग्य कर्मचारियों के बिना संस्था को चलाते है। इस तरह के संस्थानो मे बुनियादी ढाँचे, छात्र सुविधाएं, अनुसंधान आदि क्षमताओ के बीच गुणवत्ता पूर्ण सम्बन्ध कायम करना एक चुनौती है। कारण केवल शिक्षा के अन्तर्राष्ट्रीयता के कारण, इस चुनौती का एक मात्र हल यही है। कि हमे सहयोग करना चाहिए संस्थानो और राष्ट्रो के बीच ताकि इस सहयोग की भावना से ही इस शिक्षा की गुणवत्ता को बढाया जा सके।

सुझाव

- उच्च शिक्षा से समग्र विकास के लिए यह आवश्यक है। की हम कुछ सुझावो को माने।
- शिक्षा जगत मे गुणवत्ता लाने के लिए हमे भीड़ को नियत्रंण मे करना होगा। फिर चाहे कक्षाओ मे हो या फिर शिक्षको की हो, यह जरूरी है। की कार्य कम हो पर गुणवत्ता पूर्ण हो।
- शिक्षा जगत मे अधिक पारदर्शीता और अधिक जवाबदेही सुनिश्चित करना ताकि गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा बाहर आए इस के लिए जरूरी है की शिक्षा मे कॉलेजो पर दोहरा नियन्त्रण हो एक तरफ से सरकार द्वारा नियन्त्रण तथा दुसरी तरफ विश्वविधालय द्वारा नियन्त्रण होना चाहिए।
- बढती शिक्षा की मांग को लेकर हमे शिक्षा के क्षेत्र मे संस्थानो मे सीटो की संख्या को बढाना होगा और चाहिए भी साथ ही अधिक संस्थान खुलने चाहिए और उच्च विद्वानो की संख्या मे भी वृद्धि करनी चाहिए।
- कॉलेजो मे प्रयोगशाला सुविधा को समृद्ध और विस्तारित करने की आवश्यकता है।
- कॉलेजो मे एक अच्छी तरह से विकसित भाषा व प्रयोगशाला होनी चाहिए।
- कॉलेजो व विश्व विधालयो को दुर दराज के लोगो जैसे की दूसरे समुदाय के लोगो के लिए उचित वातावरण के हिसाब से छात्रावास बनाने चाहिए।

निष्कर्षः यहाँ मैं अन्तिम रूप से यही कहना चाहूँगा की नैक उच्च शिक्षा मे गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है। लेकिन उच्च शिक्षण संस्थान जिन्होने नैक से उच्च ग्रेड हासिल किए है। उनका मुख्य उद्देश्य उच्च ग्रेड हासिल करना नही होना चाहिए ब्लकि उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना होना चाहिए। हमे एक उच्च कुशल व शिक्षित युवा टीम का निर्माण करना चाहिए जो उच्च राष्ट्र निर्माण मे देश की सहायता करे। उच्च शिक्षा मे गुणवत्ता होना बहुत जरूरी है। यह इसलिए भी महत्वपूर्ण है। क्योकी यह गुणवत्ता भविष्य मे आने

वाली हमारी पीढी को एक साँचे मे ढालने का कार्य करेगी। जो हमारे राष्ट्र निर्माण को और मजबुती प्रदान करेगा।

सदर्भ सूची

1. www.naac.gov.in/access on 18/4/2019
2. www.naac.gov.in/access on 18/4/2019
3. https://educational system.blogspot.in/213/02/role of - naac-in-programe-quality-on. Html access on 17/3/2018
4. Anderson L. Increasing teacher, 1991. Effectiveness. aris: UNESCO. www.ugc.ac.in
5. institutional accredition.manual for self-appreasal of teachers education institutions
6. Aggarwal JC. Teacher's role status, services conditions and education in India doaba house, Delhi, 1998, 241.
7. Joshi S. Teacher education in retrospect. India journal of teacher education, 2007, 4.